International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 0.899
Vol.5 No.1 Sept– Oct 2017

सेठ गोविंददास के नाटकों में राष्ट्रीय भावना : अर्थ एवं स्वरूप

डॉ. रशीद नजरुद्दीन तहसिलदार
हिंदी विभाग,
कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापूर.

प्रस्तावना :

राष्ट्र के प्रति अपनत्व एवं आस्था और निष्ठा की भावना में राष्ट्रीयता निहित होती है। सारे विश्व में राष्ट्रीयता एक प्रबल शक्ति एवं प्रभावशाली प्रेरणा के रूप में कार्य करती ह॥ इसी भावना के परिणाम स्वरूप अनेक राष्ट्रों के राजनीतिक जीवन में काफी परिवर्तन हुआ ह॥ राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शार्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देती ह॥ विश्व में आज तक जितनी भी क्रांतियाँ हुई ह॑ उनमें राष्ट्रीयता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा ह॥ राष्ट्रीयता एक मानसिक अनुभूति होती ह॥ इसी कारण सारे समाज में एकता प्रस्थापित होती ह॥

राष्ट्रीयता के लिए विविध राज्यों में एकता स्थापित होने की आवश्यकता होती ह॥ राष्ट्रीयता के कारण ही अपनी जन्मभूमि के प्रति एक भावनात्मक रिश्ता तयार हो जाता ह॥ अपने देश के प्रति आस्था, अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति गास्व, अपने देश की सामाजिक, धार्मिक आ॥ राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि के द्वारा राष्ट्रीय भावना प्रकट होती ह॥ राष्ट्रीयता एक सामूहिक भाव ह॥ राष्ट्रीय भावना उस समय मुखर होता ह॑ जब कोई विदेशी अपने राष्ट्र पर बलपूर्वक आक्रमण करता ह॥ उस समय सारे देशवासियों में एकता की भावना दृढ हो जाती हकआ॥ वे सारे भेदभाव भूलकर अपने राष्ट्र की सुरक्षा हेतु संघर्ष के लिए उद्युक्त हो जाते हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में राष्ट्रीय भावना सशक्त रूप में उभरी ह॥

राष्ट्र का स्वरूप :

'राष्ट्र' संकल्पना को स्पष्ट करते समय कई मुद्दे हमारे सामने आते हैं। राष्ट्र में सारे जन समूह को एकता के सूत्र में बाँधने की शक्ति होती ह॥ राष्ट्र के आधार पर ही जनमानस में सामाजिक एकता प्रस्थापित होती ह॥ मानव एकता को ही राष्ट्र का आधार माना जाता ह॥ देशप्रेम, राजनस्तिक जीवन, भास्तिक जीवन, इतिहास, संस्कृति तथा ऐसे अनेक तत्व हैं जो राष्ट्र का आधार माने जाते हैं। वस्तुतः राष्ट्र एक भावना हकजो मानव के मानसिक चिंतन का परिणाम ह॥ उद्देश्य के आधार पर राष्ट्र राजनस्तिक आ॥ सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता ह॥

राष्ट्र का उदय कब हुआ, यह भी एक विवादास्पद प्रश्न ह॥ ''मनुष्यों में प्रारंभ से ही यह प्रवृत्ति रही हकि जिन लोगों की नस्ल, भाषा, धर्म, रीति–रिवाज आ॥ ऐतिहासिक–परम्परा एक होती थी वे परस्पर मिलकर एक संगठन में संगठित होकर जाति, जन या कबीला के रूप में समूह में रहते थे। आजकल के आदिम निवासियों आ॥ प्रागस्तिहासिक कालीन इन कबीले में राष्ट्र की भावना किसी–न–किसी रूप में विद्यमान रही ह॥'' राष्ट्र में समान शासनतंत्र की प्रणालियाँ होती ह॑ भविष्य की आकांक्षाओं के रूप में भी

राष्ट्र की ओर देखा जाता है। एक निश्चित भूभाग पर एक निश्चित समुदाय और उसमें बसनेवाले मनुष्यों में पारस्पारिक संबंध काफी गहन होते हैं। कुछ ऐसी विशेषताएँ विशेषतः भाषा जो उसे अन्य राष्ट्रीय समुदायों से अलग करती है।

राष्ट्रीय–भावना :

राष्ट्रीय भावना आधुनिक जीवन में एक बलशाली तत्व बन गया है। लगभग सभी देशों में राष्ट्रीय भावना एक विशेषता बन गई है। राष्ट्रीय भावना का विकास आधुनिक युग से संबंधित है। अठरहवीं सदी से पहले लोग राष्ट्रीय भावना से उतने परिचित नहीं थे। इसी शताब्दी में सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ और बीसवीं शताब्दी में आकर उसमें बहुत बड़ी वृद्धि होती गई। विश्व के सभी देशों में लोगों के मन में राष्ट्रीय भावना प्रभावी रूप से दिखाई देती है। आज के युग में सारे जनसमुदाय को एकता के सूत्र में बाँधने का एक बड़ा कारण यही राष्ट्रीय भावना है। ''राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है, जो मनोवैज्ञानिक है और जो परिस्थितियों का आश्रय लेकर निरंतर दृढ़तर होती जाती है।'' स्पष्ट है कि, राष्ट्रीयता का संबंध आंतरिक अनुभूति से होता है। यह एक ऐसी भावनात्मक इकाई है, जिसमें अपने देश के प्रति अगाध प्रेम, सभ्यता, संस्कृति तथा सामाजिक परिस्थितियों में सुधार की भावना छिपी रहती है। राष्ट्रीयता मनुष्य में देशप्रेम एवं देशभक्ति की भावना का संचार करती है। राष्ट्रीय भावना के कई अर्थ एवं परिभाषाएँ विद्वानों ने दी है, जिसकी चर्चा करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय–भावना का अर्थ :

राष्ट्रीय भावना के संबंध में पर्याप्त कोशगत अर्थ दिखाई देते हैं। इनसाइक्लोपीड़िया ब्रिटेनिका के अनुसार, ''राष्ट्रीय भावना वह मनस्थिति है, जिसमें व्यक्ति की सर्वोच्च निष्ठा राष्ट्र अथवा राज्य के प्रति उन्मुक्त होती है। संपूर्ण इतिहास में मातृभूमि, पैतृक परंपरा तथा स्थिर क्षेत्रीय सत्ता के प्रति भक्ति, विभिन्न मात्रा में शक्ति प्रदान करनेवाली प्रमुख भावनाओं के रूप में विद्यमान रही है।'' राष्ट्रीय भावना को सामाजिक स्थितियों के माध्यम से निर्धारित किया जाता है। उसका संबंध बाह्य से न होकर आंतरिक होता है। अपने देश के प्रति होनेवाली आस्था एवं प्रेम के माध्यम से राष्ट्रीय भावना प्रकट होती है। यह एक ऐसी भावना है, जो सामूहिक होती है। राष्ट्रीयता के कारण समाज में स्नेहभाव निर्माण होता है, जिसके कारण लोग एकता के सूत्र में बंधे जाते हैं। राष्ट्रीय भावना ने न केवल बौद्धिक तथा जन समुदायों के भावनाओं को ही प्रभावित नहीं किया है बल्कि राजनैतिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक एवं आर्थिक संबंधों को भी प्रभावित किया है।

राष्ट्रीय भावना में सर्वसमावेशक, सर्वव्यापक जाति, वंश तथा धर्म जैसी सारी प्रवृत्तियाँ लुप्त होकर उनमें एकता स्थापित हो जाती है। राष्ट्रीय भावना के आदर्श में शांति, बंधुत्व, एकता, समता, सहयोग आदि गुणों का समावेश होता है। यह भावना त्याग एवं संस्कृति से संबंधित होती है। राष्ट्रीय भावना का रूप सभी देशों में कम अधिक मात्रा में समान रीति से प्राप्त होता है। प्रत्येक राष्ट्र के साथ उसके अपने समाज का एक आंतरिक संबंध होता है। यह संबंध भावनाओं के स्तर पर इतने अधिक दृढ़ बन जाते हैं कि, लोग राष्ट्रीय भावना से घुल–मिल जाते हैं। सामाजिक हित की पवित्र भावना यह भी एक राष्ट्रीय भावना का ही अंग है। बंधुत्व राष्ट्रीय भावना का चरम उत्कर्ष है। कहना होगा की, राष्ट्रीय भावना एक व्यापक अर्थ में समाज और राष्ट्र से जुड़ी हुई एक ऐसी संकल्पना है जिसमें राष्ट्रीय विकास का उद्देश्य समाविष्ट है।

राष्ट्रीय–भावना की परिभाषा :

राष्ट्रीय भावना की परिभाषा को शब्दों में बाँधना सरल नहीं है क्योंकि वह बाह्य जगत् से नहीं बल्कि आंतरिक अनुभूतियों से संबंधित विषय है। वह गतिशील स्थितियों के संयोग से बनती है फिर भी राष्ट्रीयता की संकल्पना स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों ने अपने–अपने तरीके से परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। हेन्स कोहन ने राष्ट्रीय भावना को परिभाषा बद्ध किया है; ''राष्ट्रीय भावना वह मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति की सर्वश्रेष्ठ निष्ठा राष्ट्र के प्रति होती है।'' स्पष्ट है कि राष्ट्रीय भावना में आंतरिक प्रेरणा महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। मनुष्य की अपने राष्ट्र के प्रति होनेवाली निष्ठा व्यवहार से ज्यादा मानसिक अधिक होती है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विचारक जे. एच. हेज ने राष्ट्रीय भावना के संबंध में लिखा है; ''लोगों का वह सांस्कृतिक समुदाय जो समान भाषा बोलता है और जिसके पास समान ऐतिहासिक परंपराएँ होती हैं।'' स्पष्ट है कि, राष्ट्रीय भावना में भाषा के साथ–साथ धार्मिक, प्रादेशिक, राजनीतिक, आर्थिक, कलात्मक एवं बौद्धिक समानताएँ होना आवश्यक होता है।

प्रसिद्ध विचारवंत राजपुरुष अस्थाना ने लिखा है कि ''राष्ट्रीय भावना जातीवाद का विकसित रूप है जिसमें एक विशिष्ट भूभाग में रहनेवाली जाति विशेष की सामाजिक एकता की सीमाएँ भाषा और संस्कृति की सीमाओं से एकरूप रहती है।'' तात्पर्य; सामाजिक एकता की भावना राष्ट्रीय भावना का अभिन्न अंग है। राष्ट्रीय भावना व्यक्तिगत भावना न होकर सामाजिक भावना है इसमें जनसमूह की भावना सहाय्यक होती है। रामनारायण त्रिवेदी ने लिखा है; ''राष्ट्रीयता मुख्य रूप में वह मनोवैज्ञानिक भावना है जो उन लोगों में उत्पन्न होती है जिसके सामान्य गौरव तथा विपत्तियाँ हो, जिनकी सामान्य परंपराएँ हो।'' स्पष्ट है कि, मानव जीवन से जुड़ी सभ्यता, संस्कृति और परंपराएँ ही राष्ट्रीय भावना में सहायक होती हैं। मनुष्य के अंतःकरण की सर्वोत्तम चेतना ही मनुष्य को राष्ट्रीय भावना के प्रति प्रवृत्त करती है।

डॉ. सुधीन्द्र के अनुसार ''राष्ट्रीय भावना व्यक्तिगत नहीं सामूहिक चेतना है, जिसकी दृष्टि समूह के प्रगति पर है। देशभक्ति राष्ट्रीय भावना का सनातन रूप है और राष्ट्रवाद उसका प्रगतिशील स्वरूप है।'' स्पष्ट है कि राष्ट्रीय भावना का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। सामूहिक चेतना उसके मूल में है। विभिन्न तत्त्वों से बनी यह राष्ट्रीय भावना समूह के विकास का अभिन्न अंग है। नंददुलारे वाजपेयी का विचार है कि, ''राष्ट्रीय भावना से हमारा आशय केवल जातीय बाह्यगुणों और विशेषताओं से नहीं है। केवल उन लक्ष्यों से नहीं है, जिन्हें हम परंपरा के नाम से दोहराते चले जाते हैं। प्रत्यक्षतः राष्ट्र या जाति के उस वास्तविक सक्रीय या गंभीर जीवन से है, जो एक साथ मानवीय और विशिष्ट ऐतिहासिक अनुभव तथा जातीय दृष्टि से युक्त होने के कारण ही राष्ट्रीय है।'' जनसमुदाय के पारस्पारिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित होकर ही मनुष्य राष्ट्र के प्रति प्रेम रखता है। मानव जाति के उत्कर्ष तथा समाज की एकता के तत्त्व राष्ट्रीय भावना में समाविष्ट होते हैं।

राष्ट्रीय–भावना का स्वरूप :

राष्ट्रीय भावना का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। विभिन्न तत्वों से बना यह भाव निश्चित तौर पर सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति में सहाय्यक सिद्ध होता है। इसमें जाति, धर्म, भाषा तथा सामाजिक एकता के तत्त्व समाविष्ट है। इसके केंद्र में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक एकता रहती है। राष्ट्रीय भावना का अर्थ मुख्य रूप से देश की उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना माना जाता है। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना, वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में न्याय और स्वतंत्रता की माँग करना राष्ट्रीय भावना के अभिन्न अंग हैं। हर किसी की अपनी–अपनी राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारियाँ होती हैं। उन जिम्मेदारियों का निर्वाह हर

कोई अपनी सीमा में रहकर करता है। कलाकार अपनी कला के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करते हैं। साहित्यकार अपने आंतरिक भावनाओं को साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावना के रूप में सामाजिक ऐक्य एवं राष्ट्रीय उन्नति को वाणी देते हैं। लक्ष्मीनारायण अग्रवाल के अनुसार, ''व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हितों में अपनी सामूहिक उन्नति की भावना राष्ट्रीयता का विशुद्ध स्वरूप है।'' स्पष्ट है राष्ट्रीयता की भावना वैयक्तिक न होकर सामूहिक उन्नति को महत्त्व देती है।

जनसमूह की भावना ऐतिहासिक विशिष्ट परंपराओं से प्रेरणा पाकर ही व्यक्त होती है। हर राष्ट्र की विशिष्ट परंपराएँ होती हैं। देश के गौरवगान तथा शूरवीरों का गुणगान आदि परंपराएँ तो सारे राष्ट्रों में मिलती ही हैं। इन विशिष्ट परंपराओं से राष्ट्र को आपत्ति के समय सामर्थ्य मिलता है। जन समूह की इस राष्ट्रीय भावना के कारण ही राष्ट्र में विकास के लिए प्रेरणा प्राप्त होती है। जनसमूह की भावना समाज को अपना मानकर उसे समृद्ध बनाने में कार्यरत रहती है। ऐसे राष्ट्र में यह भावना संस्कृति के विविध अंगों का विकास करने में सहायक सिद्ध होती है। सांस्कृतिक अंगों के साथ साथ राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक अंगों से ही राष्ट्र की प्रगति होती है। इन विविध अंगों के द्वारा राष्ट्र का उत्कर्ष वैभवशाली बनाने की प्रक्रिया राष्ट्रीय भावना के अंतर्गत आती है। कहना सही होगा की, राष्ट्रीय भावना मनुष्य को व्यक्तिगत क्षेत्र से उठाकर उसे व्यापक रूप प्रदान करता है।

राष्ट्रीय भावना के प्रमुख तत्त्व :

राष्ट्रीय भावना के निर्माण में कई तत्त्वों का समावेश होता है। यह सही है कि युगीन वातावरण एवं परिवेश के अनुसार कोई तत्व अधिक तो कोई कम मात्रा में प्रकट होता रहता है। किंतु हर तत्त्व राष्ट्रीय भावना के निर्माण में अनिवार्य होता ही है इसे नकारा नहीं जा सकता। कुछ तत्त्व प्रधान और कुछ गौण स्थान ग्रहण करते रहते हैं यह बात सही है किसी भी तत्व की समाप्ति नहीं हो सकती। राष्ट्रीय भावना के तत्त्वों को लेकर और एक बात की चर्चा अनिवार्य हो जाती है कि, आजकल एक राष्ट्र के कुछ तत्त्व अन्य राष्ट्र के तत्त्वों के साथ ऐसे घुलमिल गए हैं कि, उन तत्त्वों के आधार पर उस राष्ट्र की राष्ट्रीय भावना को निर्धारित करना कठीन होने लगा है। राष्ट्रीय भावना के निर्माण में कुछ महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का समावेश होता है। वे तत्त्व हैं; भौगोलिक एकता, जातीय एकता, भाषिक एकता, संस्कृति एवं पारंपरिक एकता, धार्मिक एकता तथा राजनीतिक और आर्थिक प्रेरणाओं की एकता। इन तत्त्वों का राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

- भौगोलिक एकता
- जातीय एकता
- भाषिक एकता
- धार्मिक एकता

राष्ट्रीय भावना के विभिन्न रूप :

राष्ट्रीय भावना को और अधिक स्पष्टता से समझने के लिए हमें उसके विविध रूपों को जानना तथा समझना आवश्यक बन जाता है। राष्ट्रीय भावना और देशप्रेम, राष्ट्रवाद, ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्र कल्याण आदि रूपों के माध्यम से ही हम राष्ट्रीय भावना को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं। राष्ट्रीय भावना के यह विविध रूप निश्चित तौर पर हमें नई दिशाएँ प्रदान करता हैं।

- देशभक्ति
- राष्ट्रवाद
- अतीत का गौरव गान
- राष्ट्रविरोधी भावनाओं के प्रति क्षोभ
- राष्ट्रवंदना
- सांस्कृतिक महिमा का गान
- लोककल्याणकारी भावना
- उन्नति की अभिलाषा
- राष्ट्रकल्याण की योजना तथा संकल्प
- कल्याणकारी राजनीति
- सांप्रदायिकता का विरोध
- वर्णभावना का विरोध
- नारी–जागरण

निष्कर्ष :

राष्ट्र के प्रति आस्था की भावना ही राष्ट्रीय भावना है। सारे विश्व में राष्ट्रीय भावना एक प्रबल शक्ति एवं प्रभावशाली प्रेरणा के रूप में कार्य करती है। राष्ट्रीय भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शौर्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देती है। अपने देश के प्रति प्रेम, अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति गौरव की भावना अपने देश की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयास से राष्ट्रीय भावना, प्रकट होती है। 'राष्ट्र' शब्द व्यापक अर्थ में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों से संबंधित इकाई है। 'राष्ट्र' शब्द व्युप्तत्ति की दृष्टि से 'राज' और 'राष्ट्र' इन दोनों शब्दों के मेल से बना है। राष्ट्र केवल समुदाय का नाम नहीं बल्कि उसके साथ विशिष्ट परिस्थितियाँ जुड़ी होती हैं।

राष्ट्रीय भावना आधुनिक जीवन में एक बलशाली तत्त्व बन गया है। आज के युग में सारे जनसमुदाय को एकता के सूत्र में बाँधने का एक बहुत बड़ा कारण है राष्ट्रीय भावना। राष्ट्रीय भावना का संबंध आंतरिक अनुभूति से होता है। राष्ट्रीय भावना वह मनस्थिति है, जिसमें व्यक्ति की सर्वोच्च निष्ठा राष्ट्र के प्रति होती है। राष्ट्रीय भावना के कारण समाज में स्नेहभाव निर्माण होकर सारा राष्ट्र एकता के सूत्र में बँध जाता है। राष्ट्रीय भावना ने न केवल बौद्धिक तथा जनसमुदायों की भावनाओं को प्रभावित किया है बल्कि राजनीतिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक एवं आर्थिक संबंधो को प्रभावित किया है।

राष्ट्रीय भावना के निर्माण में कई तत्त्वों का समावेश होता है। हर तत्त्व की अपनी अलग विशेषता होती है। परिस्थिति के अनुसार कोई तत्त्व अधिक तो कोई कम मात्र में प्रकट होता रहता है। भौगोलिक एकता, जातीय एकता, भाषिक एकता, सांस्कृतिक एवं परंपराओं की एकता, धार्मिक एकता तथा राजनीतिक और आर्थिक एकता इन तत्वों का राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में महत्वपूर्ण स्थान होता है। राष्ट्रीय भावना को समझने के लिए उसके विभिन्न रूपों को जानना आवश्यक होता है। देश प्रेम, राष्ट्रवाद, ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्रकल्याण के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को समझ सकते हैं। देश के

प्रति श्रद्धा और भक्ति की भावना ही देशप्रेम है। राष्ट्रप्रेम उच्च विचार और सहानुभूति का फल है। संस्कृति की रक्षा, सामाजिक विकास की भावना तथा राष्ट्रीय उन्नति की प्रवृत्ति के कारण ही देश भक्ति और अधिक दृढ हो जाती है। देशभक्ति का रूप सामाजिक विकास से जुड़ा होता है तो विश्वबंधुत्व की भावना वैश्विक स्तर पर प्रकाशमान होती है। भारतीय समाज व्यवस्था में देशभक्ति व्यापक सामाजिक संदर्भों से जुड़ी होती है।

राष्ट्रवाद जाति तथा वर्णभेद को भूलकर राष्ट्र के कल्याण की भावना से प्रेरित होता है। व्यक्ति, परिवार, संप्रदाय और संकुचित धर्म भावना के आगे जाकर राष्ट्रवाद की कल्पना की जाती है। राष्ट्रवाद के ऐतिहासिक और भौगोलिक तत्त्व राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह राष्ट्रवाद धर्म, जाति और संप्रदायों के परे जाकर विविधता में एकता की मिसाल स्थापित करता है। यहाँ संकीर्ण वृत्ति और सांप्रदायिकता जैसे दोष नष्ट होकर त्याग और बलिदान की भावना विकसित होती है। राष्ट्रीय भावना में अतीत का गौरव महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। देशवासी उज्वल अतीत की ओर आकर्षित होकर वर्तमान दशा में सुधार लाना चाहता है। अतीत का गौरव ही नवजागृति का साधन बन जाता है।

राष्ट्रीय भावना के विकास में बाधक सिद्ध होनेवाली प्रवृत्तियों के प्रति हर देशवासी के मन में क्षोभ प्रकट होता है। अपने राष्ट्र को वंदनीय मानकर उसके सामने नतमस्तक होने की भावना निश्चित रूप से राष्ट्र के प्रति अपने अनुराग को बढ़ा देती है। अपने राष्ट्र की उन्नति तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रयास करनेवाले हर देशवासी के मन में राष्ट्रवंदना का भाव होता है। अपने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की कामना इसके मूल में होती है।

प्रत्येक देश की अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा होती है। सांस्कृतिक महिमा का गुणगान सांस्कृतिक एकता को बल देता है। सांस्कृतिक मूल्य राष्ट्रीयता का पोषक तत्त्व है जिसका गुणगान बराबर होता आ रहा है। लोककल्याणकारी भावना राष्ट्रीय भावना को सुदृढ बना देती है। लोककल्याण की भावना राष्ट्र तक नहीं बल्कि विश्व तक समाहित होती है। राष्ट्र उन्नति की अभिलाषा राष्ट्र कल्याण की योजना तथा संकल्पनाएँ ऐसे तत्त्व हैं जिनके कारण राष्ट्रीय भावना का विकास होता है। स्पष्ट है कि राष्ट्रीय भावना व्यापक अर्थ में हमारे सम्मूख उपस्थित होती है।

संदर्भ :

1. सुरेंद्र यादव- माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता, आग्रा, प्रगति प्रकाशन, प्र. सं. 1978) पृ.3.
2. कॉम्प्टन्स पिक्चर्ड इनसायक्लोपिडीया, खंड१०, प्र. सं. 1956, पृ.15
3. संपा. शिवदत्त ज्ञानी- भारतीय संस्कृति कोश, बनारस संस्कृति प्रकाशन संवत् 2000, पृ. 264.
4. डॉ. हरदेव बाहरी- राजपाल हिंदी कोश, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, सं. 2009, पृ. 700.
5. संपा. सुधीन्द्र पाठक -हिंदी संस्कृत शब्दकोश, राजहंस प्रकाशन दिल्ली प्र. सं. 1947, पृ. 142.
6. डॉ. सुधीन्द्र 'हिंदी कविता में युगान्तर' (दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स प्र. सं. 1954) पृ.37.
7. डॉ. विनय मोहन शर्मा, 'साहित्य शोध समीक्षा' (कानपूर, व्हीनस प्रकाशन प्र. सं. 1998) पृ.4.